अध्याय - द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय - द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनर्वालोकन

प्रस्तावना

सतत् मानव प्रयासों से, भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधान के द्वारा प्रसतावित अध्ययन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संबंधित समस्याओं पर पहले किये कार्य को बिना जो कि स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नही हो सकता। अनुसंधान प्रारंभ करने की प्रथम सीढी साहिल का पुनरावलोकन है। संबंधित साहित्य का अध्ययन अनुसंधानकर्ता के लिए महत्वपूर्ण है, इसके अभाव में वस्तुनिष्ठ रूप से अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ा सकना जब तक उसे ज्ञात न हो की उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका, है, किस विधि से कार्य किया गया है, तथा उसके निष्कर्ष क्या आये है तब तक समस्या का निर्धारण और परिसीमन करने में तथा शोध कार्य की रूपरखा तैयार करने में कठिनाई आती है। शोध से संबंधित पूर्व जानकारी हमें अपने कार्य को नया रूप व नये आयाम देने में मददगार साबित होती है।

गुप्ता (1999) ने अपने अध्ययन में ''वर्तमान अध्ययन शिक्षण की विभिन्न सामाजिक और आर्थिक स्तर की किशोरावस्था की बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन'' के अंतर्गत शोध कार्य किया गया। जिसका उद्देश्य यह था कि अलग-अलग विद्यालयों और आर्थिक स्तर के परिवारों से आने वाली छात्राओं का सामाजिक समायोजन का अध्ययन किया। इसका उद्देश्य यह है कि अलग-अलग विद्यालयों से आने वाली छात्राओं का सामाजिक समायोजन में तुलनात्मक अध्ययन किया। इस शोध में इन्होनें ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के प्राइवेट और सरकारी विद्यालयों को शामिल किया गया। न्यादर्श के रूप 600 छात्राओं को चयनित किया। निष्कर्ष में पाया गया कि ग्रामीण विद्यालयों की छात्राओं के बजाय शहरी विद्यालय की छात्राओं की तुलना में प्राइवेट विद्यालय की छात्राओं का सामाजिक समायोजन अच्छा था।

सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं का सामाजिक समायोजन कन्या विद्यालय की छात्राओं की तुलना में अच्छा था।

राय.(2001) ने अपने अध्ययन में ''वाराणसी के कन्या विद्यालयों एवं सह-शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की सामाजिक,आर्थिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'' शीर्षक के अंतर्गत शोध किया गया। न्यादर्श के रूप में इन्होंने, 1016 और 912 छात्राओं को पाँच जिलों, घाजीपुर, बलिया, वाराणसी, मिर्जापुर और जोनपुर से ली गई थी। जिसमें उन्होंने ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों को शामिल किया गया था। उपकरण के रूप में इन्होंने मोनी प्रासॅबल्म चेकलिस्ट, व्यक्तित्व परख प्रश्नावली और आर्थिक सामाजिक स्तर स्केल (वर्मा और सक्सेना) को शामिल किया गया था। निष्कर्ष के रूप में पाया गया था कि सह शिक्षा विद्यालय की छात्राओं का सामाजिक समायोजन, कन्या विद्यालय की छात्राओं से ज्यादा अच्छा था। वे सामाजिक, आर्थिक, भावनात्मक व्यक्तिगत समायोजन आसानी से कर पा रही थी।

पुरी और शर्मा (2006) ने अपने अध्ययन में ''रिलेशनशिप ऑफ स्ट्रेस विद एडजस्टमेंट इन यूनिवर्सिटी गर्ल्स'' शीर्षक के अंतर्गत शोध कार्य किया। पी.पुरी और एस. शर्मा ने राजस्थान के महिला विश्वविद्यालय की 100 महिलाओं को न्यादर्श के लिए चयनित किया, जो कि पोस्ट ग्रेजुएट महिलाएँ थी। इन्होंने एक स्ट्रेस स्केल का एवं समायोजन इंवेंटरी का प्रयोग किया गया और इन्होनें इस शोध में तनाव एवं समायोजन में संबंध भी देखा। उन्होंने यह निष्कर्ष पाया कि कम तनाव के साथ महिलाएँ अपने घर में रिश्तों में, वातावरण में, दोस्तों में, उनकी भावनाओं में, आसानी से समायोजन कर सकती है।

मोदी (2006) ने अपने अध्ययन में ''अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि,शैक्षणिक दुश्चिता और सामान्य दुश्चिंता का अध्ययन''प्रस्तुत शोध में अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति की छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि शैक्षणिक दुश्चिंता और सामान्य दुश्चिंता का अध्ययन किया है। परिणामतः सामान्य अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षणिक व

सामान्य दुश्चिंता में अंतर होता है। अनुसूचित जाति के छात्रों को सरकार द्वारा काफी सुविधाएँ प्रदान की गई है। जिससे उनमें सामान्य दुश्चिंता व शैक्षणिक दुश्चिंता सामान्य छात्रों की अपेक्षा कम होती है। सामान्य व अनुसूचित जाति के छात्रों के बीच शैक्षणिक उपलब्धि में आज कोई विशेष अंतर नहीं है क्यों कि अनुसूचित जाति के छात्र भी आजकल शिक्षा की ओर पूरा–पूरा ध्यान देने लगे है, जिससे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ी है।

मुछाल एवं कुमार (2008) ने अपने अध्ययन में ''उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि'' शीर्षक पर शोध कार्य किया गया। इन्होंने कक्षा ग्यारहवीं के 60 विद्यार्थियों को लिया गया। जिसमें इन्होंने शैक्षिक अभिप्रेरणा के अध्ययन हेतु टी.आर. शर्मा द्वारा निर्मित एकेडमिक अचीवमेंट मोटीवेशन टेस्ट का प्रयोग किया। समायोजन के अध्ययन हेतु ए.के.पी. सिन्ध एंव आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित 'एडजस्टमेंट इन्वेंटरी फॉर स्कूल स्टूडेंट' का प्रयोग किया गया। शैक्षिक उपलब्धि के रूप में विद्यार्थियों के कक्षा दसवीं के प्राप्तांकों को लिया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनके समरायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह संबंध ज्ञात करना था। परिणाम स्वरूप उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के मध्य सार्थक सह संबंध होता है। विद्यार्थियेां की शैक्षिक अभिप्रेरणा, उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करती है। जब विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा उच्च स्तर की होती है तो उनके समायोजन एवं शौक्षिक उपलब्धि का स्तर भी अच्छा होता है।

अग्रवाल और दीक्षित (2008) ने अपने अध्ययन में ''विद्यार्थियों पर नैराश्य प्रतिक्रियाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव'' प्रस्तुत शोध का उद्देश्य कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं की नैराश्य प्रतिक्रियाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव देखा गया। इन्होंने 120 छात्राओं को शामिल किया एवं प्रदत्तों के संकलन हेतु बी.एम. दीक्षित एवं डी.एन. श्रीवास्तव (1987) द्वारा निर्मित रियेक्शन टू फ्रास्ट्रेशन स्केल का प्रयोग किया गया। परिणाम स्वरूप

यह पाया गया कि विज्ञान वर्ग की छात्राओं के आक्रमकता प्रवृत्ति रूप कला वर्ग की छात्राओं में स्थिरीकरण प्रवृत्ति अधिक पायी गई।

केवट (2009) ने अपने अध्ययन में ''समेकित शिक्षा के अंतर्गत सामान्य एवं विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत विकलांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक का अध्ययन'' प्रस्तुत शोध में विकलांग बच्चों की समेकित शिक्षा के अंतर्गत सामान्य एवं विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत बालक-बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्ष इन विशिष्ट बालकों की प्रतिज्ञा, उपलब्धि एवं समायोजन की दिशा में सहयोगी होगी। इस अध्ययन से यह तथ्य प्राप्त होता है कि समेकित शिक्षा के अंतर्गत अध्ययनरत सामान्य विद्यालय एवं विशिष्ट विद्यार्थियों में अध्ययनरत विकलांग विद्यार्थियों में अध्ययनरत विकलांग विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान देकर उनके विकास में समुचित अवसर देना चाहिए।

नारायण और विजयालक्ष्मी (2010) ने अपने अध्ययन में ''इमोशनल इंटेलीजेनस एण्ड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ स्कूल चिल्ड्रन''शीर्षक पर शोध किया गया। इस शोध में स्कूल में विद्यार्थियों में इमोशनल इंटेलीजेन्स एण्ड एकेडमिक अचीवमेंट के बीच संबंध की खोज की गई। जो कि एडोलसेन्स की उम्र में पूर्ण रूप से नहीं पहुँचे है। न्यादर्श के रूप में इन्होंने 200 छात्रों को शामिल किया गया है। इमोशनल इंटेलीजेन्स स्केल का प्रयोग किया। शैक्षिक उपलब्धि के लिए इन्होंने छात्रों की पिछली कक्षा के परिणाम को लिया है। परिणाम यह आया कि छात्रों में इमोशनल इंटेलीजेन्स और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक अंतर पाया गया और साथ ही छात्र एवं छात्राओं के बीच हहाई अचीवर्स तथा लो अचीवर्स के बीच सार्थक अंतर पाया गया।

देवगन (2010) ने अपने अध्ययन में ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आत्म नियंत्रण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन'' पर शोध कार्य किया गया। आत्म नियंत्रण बालक के उस व्यवहार से संबंधित है जिसे वह किसी भी व्यक्ति की अनुपस्थिति या बाहरी वातावरण के बिना स्वयं

निर्देशित करता है। अर्थात् स्वाभाविक आवेश की अभिव्यक्ति को नियंत्रित करने की क्षमता रखता है जिससे सही निर्णय लेने में सफल होता है। प्रस्तुत शोधपरक लेख आत्म नियंत्रण के प्रमुख तीन आयाम–आत्मनियंत्रण के लिए योग्यता, आवेगशीलता, आत्मकेंद्रण को ही लिया गया है। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य (क) विद्यार्थियों के आत्म नियंत्रण का अध्ययन (ख) आत्म नियंत्रण के विभिनन आयामों से संबंधित व्यवहारों का अध्ययन एवं (ग) शैक्षिक उपलब्धि तथा आत्म नियंत्रण के मध्य संबंध का अध्ययन करना है शोध के अंतर्गत नियंत्रण मापनी का प्रयोग किया गया। शोध उपलब्धियों में उच्चस्तरीय आत्म नियंत्रण पाया गया तथा पाया गया कि आत्म नियंत्रण एवं उपलब्धि एक दूसरे से संबंधित है। निष्कर्ष माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आत्म नियंत्रण एवं शैक्षिक उपलब्धि दोनों चर आपस में आत्म नियंत्रण को विकसित करने के प्रयास किये जाने चाहिए। जैसे – शैक्षिक प्रशासन के लिए, शिक्षकों के लिए, अभिभावकों के लिए, विद्यार्थियों के लिए निर्देशनकर्ता एवं परामर्शदाताओं के लिए।

श्रीकला (2010) ने अपने अध्ययन में ''एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ स्टूडेन्टस डज़ गोल ओरियेन्टेंशन मेटर'' शीर्षक पर शोध कार्य किया गया। यह एक प्रयोगात्मक अध्ययन है। जो कि केरला के कक्षा 9वीं के छात्रों पर किया गया। इस शोध में छात्रों में गोल ओरियेंटेशन तथा शैक्षिक उपलब्धि में इनका प्रभाव देखा गया। इस शोध के परिणाम में पाया गया कि जो छात्र अपना लक्ष्य निर्धारण कर अध्ययन करते है उनकी शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती है और जो छात्र बिना लक्ष्य निर्धारण के अध्ययन करते है उनका शैक्षिक उपलब्धि का स्तर मध्यम या निम्न होता है।

डीसेथ एण्ड थेरेस (2010) ने अपने अध्ययन में''ए मेडीटेशन एनालाइसिसि ऑफ अचीवमेंट मोटिव्स, गोल्स लरनिंग, स्ट्रेटीजीस, एण्ड एकेडमिक अचीवमेंट''प्रस्तुत शोध में अचीवमेंट मोटिवस, अचीवमेंट, गोल्स, लरनिंग स्ट्रेटीजीस एण्ड एकेडमिक अचीवमेंट के बीच संबंध पर शोध कार्य किया गया। न्यादर्श के रूप में इन्होंने नारवे की बेरगन यूनिवर्सिटी से 229

छात्रों को शामिल किया गया। निष्कर्ष में देखा गया कि शैक्षिक उपलिब्ध का सार्थक संबंध परफॉरमेंस एप्रोच गोल, मास्ट्री गोल और स्ट्रेटजी लरनिंग, में रहा तथा नकारात्मक संबंध परफॉरमेंस-एवोडेंस गोल और सरफेस लरनिंग स्ट्रेटजी में रहा। अंत में पाया गया कि विभिन्न तरह का अधिगम शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

दुबे (2011) ने अपने अध्ययन में ''विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन का प्रभाव''शीर्षक पर शोध कार्य किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा और समायोजन के मध्य सार्थक संबंध है। विद्यार्थियों को मिलने वाली शैक्षिक अभिप्रेरणा उनके विद्यालय में अच्छे समायोजन तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में सहायक होती है। शैक्षिक अभिप्रेरणा द्वारा विद्यार्थियों की असमायोजन असफलता और निम्न शैक्षिक उपलब्धि की अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। प्रतिदर्श के रूप में कक्षा 12वीं के 60 विद्यार्थियों को लिया गया। उपकरण - शैक्षिक अभिप्रेरणा के अध्ययन हेतु टी.आर. शर्मा द्वारा निर्मित 'एकेडमिक एचीवमेंट मोटीवेशन टेस्ट का प्रयोग किया गया। समायोजन के अध्ययन हेतु ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित 'एडजस्अमेंट इवेंटरी फार स्कूल स्टूडेंट का प्रयोग किया गया। शैक्षिक उपलब्धि के रूप में विद्यार्थियों के कक्षा 11 के प्राप्तांकों को लिया गया। निष्कर्ष- उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों क शैक्षिक अभिप्रेरणा उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह संबंध होता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा उनके समायोजन तथ शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक अभिप्रेरणा उच्च स्तर की होती है। तो उनके समयोजन एवं शैक्षिण उपलब्धि का स्तर भी उच्च होता है

सिंह और पामनू (2011) ने अपने अध्ययन में ''इन्ट्रेक्टिव इनफ्लूएन्स ऑफ एडजस्टमेंट एण्ड जेन्डर ऑन एकेडमिक अचीवमेंट'' शीर्षक पर शोध कार्य किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में विभिनन प्रकार के समायोजन का

प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि में देखा गया। न्यादर्श में इन्होंने अमृतसर के 246 छात्र, छात्राओं को शामिल किा गया। जों कि गाँव, शहर, प्राइवेट विद्यालय, सरकारी विद्यालय आदि के छात्र–छात्राओं को शामिल किया गया। उपकरण में इन्होंने बेल के समायोजन इन्वेंटरी का प्रयोग किया गया तथा शैक्षिक उपलब्धि के लिए छात्र–छात्राओं की पिछली कक्षा के प्राप्तांकों को शामिल किया गया। परिणाम यह पाया गया जेन्डर होम एडजस्टमेंट, जेन्डर एण्ड हेल्थ एडजस्मेंट, जेन्डर एण्ड इमोशनल एडजस्टमेंट, जेन्डर एण्ड इमोशनल एडजस्टमेंट ऑन एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ एडोलसेन्ट पर काई प्रभाव नहीं देखा गया। परंतु छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन छात्रों की तुलना में बेहतर था।